।। श्री सरस्वती जी की आरती ।।

आरती करूँ सरस्वती मातु, हमारी भव भय हारी हो ।

हंस वाहन पदमासन तेरा, शुभ्र वस्त्र अनुपम तेरा ।

रावण का मान कैसे फेरा, वर मांगन बन गया सबेरा ।

यह सब कृपा तिहारी हो, उपकारी हो मातु हमारी हो ।

तमोज्ञान नाशक तुम रवि हो, हम अम्बुजल विकास करती हो।

मंगल भवन मातु सरस्वती हो, बहुकूकन बाचाल करती हो ।

विद्या देने वाली वाणी धारी हो, मातु हमारी हो ।

तुम्हारी कृपा गणनायक, लायक विष्णु भये जग के पालक ।

अम्बा कामायी सृष्टि ही कारण |

भये शम्भु संसार ही घालक ही कारण, बन्दो आदि ।

भगवती जग सुखकारी हो, मातु हमारी हो ।

सद्बुद्धि विद्याबल मोही दीजै, तुम अज्ञान हट रख लीजै ।

जन्म भूमि हित अर्पण कीजे, कर्मवीर भस्मसिंह कर दीजै!

ऐसी विनय हमारी, भवभय हारी हो, मातु हमारी हो ।

आरती करूँ सरस्वती मातु, हमारी भव भय हारी हो ।

सभी आरती के पीडीएफ कहीं भी डाउनलोड .-

AtoZpe.in